www.sadinama.in

सदीनामा

सोच में इज़ाफा

ISSN : 2454-2121

वर्ष-19 ○ अंक-11 ○1 से 31 अक्टूबर 2019○ पृष्ठ-32 ○ R.N.I. No. WBHIND/2000/1974 ○मूल्य - 10 रुपये

महात्मा गाँधी और लालबहादुर शास्त्री को याद करते हुए

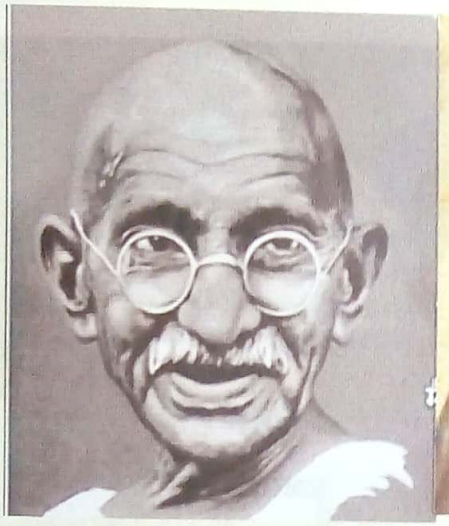

महात्मा गाँधी

डॉ॰ प्राणजीवन मेहता

गोपाल कृष्ण गोखले

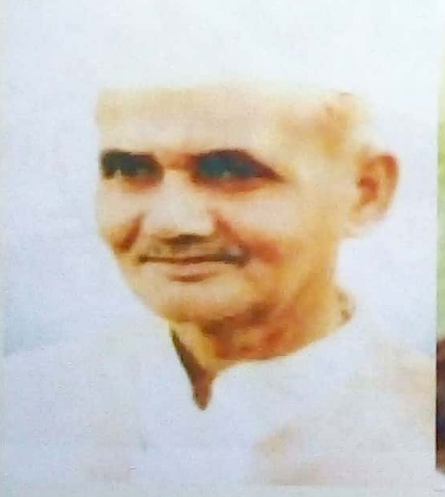

लालबहादुर शास्त्री

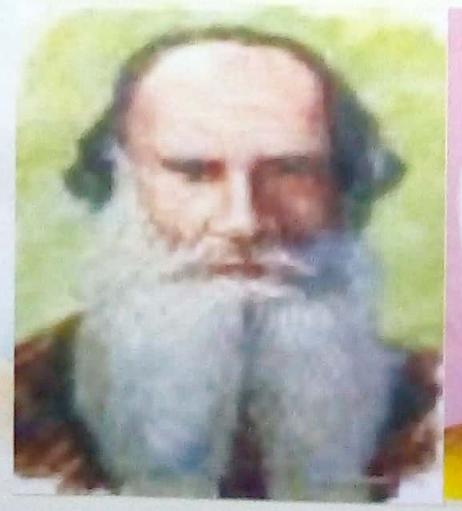

लीलो टॉलस्टॉय

लाला लाजपत राय

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

गाँधी, कांग्रेस और आर.एस.एस.

आने वाली पीढ़ी को कम विश्वास होगा कि गांधी इस तरह मार-पीट और खून खराबे के बीच चले गये अभी तक महात्मा गाँधी राजनीतिक बयानबाजी पर हावी थे देश की दो सबसे बड़ी पार्टियाँ कांग्रेस और बीजेपी ने महात्मा गाँधी की निंदा करने का आहवान किया। कांग्रेस नेताओं ने महात्मा गाँधी की हत्या के लिए आर.एस.एस. और बीजेपी की विचारधारा पर आरोप लगाये। बीजेपी और आर एस एस के समर्थक बदले में स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस को भंग होते देखना गाँधी जी की अन्तिम इच्छा की याद दिलाते हैं। इन दावों का विचित्र इतिहास है।

वास्तव में महात्मा गाँधी ने क्या कहा था ?

नाथूराम गोडसे (जिनकी आरएसएस से सम्बन्ध पर अनिश्चित रूप से बहस चल रही है।) के द्वारा हत्या के कुछ दिन बाद हरिजन पत्रिका में महात्मा गाँधी द्वारा लिखित अपनी अंतिम इच्छा और वसीयतनामा के तहत एक लेख प्रकाशित किया था इस लेख में महात्मा गाँधी ने लिखा था कि कांग्रेस का उपयोग समाप्त हो चला है और सलाह दिया कि मौजूदा कांग्रेस संगठन को भंग करें। इन दो बातों का उपयोग कांग्रेस के विरोधियों द्वारा सबसे पुरानी पार्टी पर हमला करने के लिए किया जाता है। लेकिन यह पूरी तस्वीर नहीं है। महात्मा गाँधी ने कांग्रेस के बारे में क्या कहा था ? यह जनवरी 1948 में राष्ट्रपिता द्वारा 27 जनवरी 1948 को लिखी गई एक लेख का अंश था जो नई दिल्ली में उनकी हत्या के तीन दिन पहले लिखा गया था, आजादी के बाद के युग में यह लेख एक मसौदा संविधान था इस पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा चर्चा की जानी थी और इसे पारित करने के बाद अपनाने के लिए वोट दिया जाता। लेकिन महात्मा ने भारत के भविष्य को बनाने में कांग्रेस की उपयोगिता देखी। उन्होंने कांग्रेस के लिए मसौदा संविधान में अपने कारणों को सूचीबद्ध किया उन्होंने कहा भारत को अभी भी अपने शहरों और कस्बों से अलग सात सौ हजार गाँवों के संदर्भ में सामाजिक नैतिक और आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करनी हैं। महात्मा गाँधी ने आगे कहा है - सैन्य शक्ति परंनागरिक की असमानता के लिए संघर्ष भारत की लोकतांत्रिक लक्ष्य की प्रगति के लिए बाध्य है, इसे राजनीतिक दलों और सांप्रदायिक निकायों के साथ अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा से बाहर रखना होगा।''

महात्मा गाँधी ने लिखा ''इन सब और अन्य कारणों से ए.आई.सी.सी. मौजूदा कांग्रेस संगठन को भंग करने का संकल्प करता है और अवसर की मांग के अनुसार उन्हें बदलने के लिए सत्ता के साथ निम्नलिखित नियमों के तहत एक लोक सेवक संघ में फूल चढ़ाना है। उसी दिन उसी हरिजन देश में कांग्रेस के महत्व और भविष्य के बारे में महात्मा गाँधी का एक और बयान प्रकाशित किया।''

''भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जो सबसे पुरानी राजनीतिक संगठन हैं और जो कई लड़ाइयाँ स्वतंत्रता के लिए अपने अहिंसक तरीके से लड़ी उसे समाप्त की अनुमति नहीं दी जा सकती। यह सिर्फ राष्ट्र के साथ समाप्त हो सकती है।''

महात्मा गाँधी ने उसी दिन कहा था जब उनकी अंतिम इच्छा और वसीयतनामा प्रकाशित हुआ था। स्पष्ट रूप से पर्याप्त है महात्मा गाँधी ने कांग्रेस को जारी रखने की कामना की, लेकिन वह तब भी स्वतंत्र भारत में राजनीतिक पार्टी के रूप में अपने भविष्य के बारे में सोच रहे थे, जब एक कथित पूर्व आरएसएस कार्यकर्ता द्वारा उनकी हत्या कर दी गई थी।

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

आरएसएस के बारे में महात्मा गाँधी के विचार

आरएसएस लम्बे समय से महात्मा गाँधी की आलोचना कर रहा था। आरएसएस ने गाँधीवादी विचारों और दर्शन के प्रति अपना दृष्टिकोण को नरम कर दिया था। ऐसा लगता है कि महात्मा के जीवन काल में नापसंदगी व्यक्तिगत थी। 9 अगस्त 1942 को जब भारत छोड़ो आन्दोलन शुरु किया गया था तब महात्मा गाँधी ने हरिजन पत्रिका में लिखा था कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसकी गतिविधि के बारे में सुना और यह भी जानते हैं कि यह साम्प्रदायिक संगठन था कुछ सांप्रदायिक नारे का जवाब देते हुए, जिनके खिलाफ शिकायतें की गई थीं महात्मा गाँधी ने लिखा मैंने आरएसएस के बारे में बहुत बातें सुनीं मैंने सुना है कि संघ इस सारी कुप्रथा का मूल है। गांधी के सचिव प्यारेलाल ने महात्मा गांधी 'द लास्ट फैज' में दर्ज किया था कि वे एक संगठन के रूप में आरसएसए की विचारधारा और गतिविधियों की बहुत सराहना नहीं करते थे। देश के विभाजन के बाद की घटना के बारे में बताते हुए प्यारेलाल ने कहा कि कई लोग महात्मा गाँधी के पास आए और बाघा बोर्डर जो पंजाबी शरणार्थियों के लिए एक प्रमुख परागमन शिविर है उसमें आरएसएस कैडरों द्वारा की गई कड़ी मेहनत, साहस और सेवा के लिए प्रशंसा करते हैं। लेकिन महात्मा गाँधी ने उन्हें यह कहते हुए चुप करा दिया कि ''मत'' भूलो हिटलर के नाजी और मुसोलिनी के तहत फासीवादी भी थे।

महात्मा गाँधी और आरएसएस के बारे में दूसरों के विचार

महात्मा गाँधी ने स्वयं आरएसएस के बारे में ज्यादा नहीं लिखा है। लेकिन सितंबर 1947 में महात्मा गाँधी की एमएस गोलवलकर के साथ बैठक के बाद महात्मा गाँधी ने अपनी प्रार्थना सभा में तत्कालीन आरएसएस प्रमुख के हवाले से कहा कि संगठन हिंसा में विश्वास नहीं करता था और मुस्लिम विरोधी नहीं था। गोलवलकर ने महात्मा गाँधी से स्पष्ट रूप को कहा था कि वह हर एक सदस्य के लिए जिम्मा नहीं ले सकती लेकिन उन्होंने आश्वासन दिया कि एक संगठन के रूप में आरएसएस हिंसा में विश्वास नहीं करता और अन्य धार्मिक विश्वासों के लोगों को मारने में विश्वास नहीं करते अपनी पुस्तक में मोहनदास राजमोहन गाँधी लिखते हैं कि महात्मा गाँधी ने गोलवलकर को लोगों के सामने अपने विचार रखने को कहा गोलवलकर ने महात्मा गाँधी से कहा कि वे उन्हें यह कहते हुए उद्धृत कर सकते हैं। इस मुलाकात के बाद महात्मा गाँधी ने विभाजन के दौरान हुई सांप्रदायिक हिंसा के बारे में बात करते हुए प्रार्थना सभा में आरएसएस के बारे में बात की। 27 अक्टूबर 1948 को सरदार वल्लभभाई पटेल को लिखे पत्र में महात्मा गाँधी और जवाहरलाल नेहरू के एक अन्य सहयोगी ने लिखा कि मुझे याद है कि बापू ने मुझे एमएस गोलवलकर (तत्कालीन आरएसएस प्रमुख) के साथ अपनी पहली मुलाकात के बाद बताया था कि वह दूसरी या तीसरी मुलाकात के बाद उन्होंने गोलवलकर और आरएसएस के खिलाफ बहुत मजबूत राय व्यक्त की और कहा कि उनके शब्द पर भरोसा करना असंभव है।

(यह लेख इंडिया टुडे के 2/10/2017 अंक में छपा था। लेखक, थे प्रभाष कुमार दत्ता। हमारे लिए वह अनुवाद राजा साव ने किया है - सं.)

जीतेन्द्र जितांशु
jjitanshu@yahoo.com

Scanned by CamScanner

संपादक

जीतेन्द्र जितांशु

9231845289

सम्पादकीय सलाहकार

यदुनाथ सेउटा

उप-सम्पादक

तितिक्षा

मिनाक्षी सांगानेरिया

संरक्षक मंडल :

आरती चक्रवर्ती

एच॰ विश्ववाणी

शिवेन्द्र मिश्र

राजेन्द्र कुमार रुइयां (अमेरिका)

डीटीपी, लेआउट तथा भूल-सुधार

रमेश कुमार कुम्हार

राजेश्वर राय

मारिया शमीम

कवर पेज कलर का चुनाव :

उषा सिंह, दिल्ली

केहु के कुछो ना दिहल जाला

मनीऑर्डर तथा पत्राचार का पता :

संपादक - सदीनामा

38E, Prince Bakhtiar Sah Road

Kolkata - 700 033

West Bengal

E-Mail : sadinama2000@gmail.com

कवि स्मरण एवम कवि सम्मेलन

22 सितम्बर, कोलकाता, हिन्दी के प्रख्यात कवि स्व॰ डॉ॰ चन्द्रदेव सिंह के जन्म दिवस के अवसर पर तिरंगा अगम काव्य संगम और आदर्श युवक संघ (आयुस) काशीपुर के संयुक्त तत्वावधान में कवि गोष्ठी एवं संस्मरण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष मंडल में उपस्थित श्री तारक दत्त सिंह, प्रो॰ सत्य प्रकाश तिवारी, राम प्रकाश सिंह, हीरा लाल साव, अनवर अली तथा मुस्लिम नवाज ने डॉ॰ चन्द्रदेव सिंह के बारे में अपने संस्मरण सुनाए।

काव्य पाठ करने वाले अन्य कवि और शायर में थे, शम्भू लाल जालान 'निराला', विश्व विजय कुमार चौबे, नीता अनामिका, जीवन सिंह, जतिब हयाल, जितेन्द्र जितांशु, मीनाक्षी सांगानेरिया, नन्द लाल रौशन; विश्वजीत सागर, मुकेश कुमार सोनी, रणजीत भारती, डॉ॰ वृजमोहन सिंह, प्रदीप कुमार धानुक, राम नारायण झा, कुंवर वीर सिंह मार्तण्ड, विकास अत्रि, राय बिहारी गिरि 'रवि', बुद्धदेव कोला, सहर मजीदी, इकबाल अकील, फौजिया अख्तर, सोहेल खान सोहेल, वदूद आलम आफाकी, सईद आजर. मुहम्मद मुकीम, आमिन अंसारी आदि ने गीत गजल, कविता पाठ कर उपस्थित सभी का मन मोह लिया। मंच का सफल संचालन सदीनामा पत्रिका के संपादक एवं कवि जितेन्द्र जितांशु ने किया। संयोजक शम्भू लाल जालान निराला ने कार्यक्रम के अन्त में धन्यवाद ज्ञापित कर गोष्ठी समाप्ति की घोषणा की ।

गाँधी पर प्रदर्शनी आयोजित

महात्मा गाँधी के 150 साल पूरे हुए हैं इस उपलक्ष्य में रविन्द्र भारती जोड़ा सांकू और मिनिस्ट्री आफ इन्फारमेसन बोर्डकास्टिंग आफ इंडिया रिजनल आउटरिच ऑफ इंडिया ने स्वाति फेडरेशन, कोलकाता को इस पूरे प्रोग्राम का दायित्व दिया। यह प्रोग्राम 23 सितम्बर से 29 सितम्बर तक रखा गया। गांधी के जीवन पर प्रदर्शनी उनकी किताबें और कई प्रकार के कार्यक्रम रखे गये।

इस प्रोग्राम की अध्यक्षता नृत्यांगना आलोकनन्दा जी ने की। उनके साथ प्रो॰ सोमनाथ सिन्हा, एनएसएस जे नामचू, एडीजी पीआई, डायरेक्टर पी आई बी, आशीष लाकरा गुरुपद हरिनायक, दूरदर्शन उद्घोषिका प्रियंका चारण तथा संचालक संजय दत्ता, आकाशवाणी के उपस्थित थे। यह प्रोग्राम जोड़ासांकू में इसलिए सम्पन्न हुआ क्योंकि यहाँ गांधी जी और रवीन्द्र नाथ जी एक मुलाकात हुई थी। इस प्रोग्राम में एन एस एस भी सक्रिय थी ।

Scanned by CamScanner

मेरी खिड़की से कलकत्ता

अब
उतना सुन्दर नहीं दिखता
जैसा
गाँव से दिखता था, कलकत्ता

दोनों के बीच
फड़फड़ाते पंखों पे आरूढ़
जिंदा सपने होते थे
और होते थे
जमीन से आसमान नापने के
मचलते हौसले,
अंत गिनती जिंदगियों को
पूरी उम्र के वरदान,
दुःख हरनी रेलगाड़ी,
गृहस्थी का पूरा सामान,
बच्चों के खिलौने,
पिताजी के खिलौने
पिताजी की धोती,
माँ की साड़ी
और भी बहुत कुछ
जो हमें भी सभ्य बनाता था।

आज
मेरी खिड़की और कलकत्ते
के बीच
नजर आएंगी
कुछ इमारतें
कुछ चिमनियां
छत्तों पे उतरते जहाज
बंद दरवाजे
और उनके बीच
दबोची गयी, हांफती हुई
हमारी सबसे पवित्र नदी
जो अब गाढ़ी हो गयी है।

आंकड़ों में बढ़ता
लेकिन खिड़की से
सिमटता दिख रहा है,
दीवारों के बीच
कहीं खोता हुआ
अपनी मूल आत्मा को।

मशीनों की सुन्दर धुन को,
जीवन में घोलने वाला शहर,
संवेदना से सिक्त
मजदूरों की अंतिम शरणगाह,
लाल और हरे रंगों से
भींगने लगा है।
उत्सवों का जश्न
प्रदर्शन और आजमाइशों की
गर्मी से पिघलने लगा है।

सफेद कबूतरों को
दाने खिलाने पड़ेंगे
थोड़े दूर ही सही
कुछ कारखाने
जिंदा बचाने पड़ेंगे।
ये शहर जिंदा लोकतंत्र का है
सत्ताशक्त निगाहों पर
प्यार के चश्मे चढ़ाने पड़ेंगे।

श्वेतांक कुमार सिंह, चकिया, बलिया
sksing011@gmail.com
Phone : 8318983664

Scanned by CamScanner